प्रसंगशः

आलोक मेहता

बेईमानों की भीड़ में ईमानदार को गाली

सत्ता व्यवस्था, न्याय व्यवस्था, वैज्ञानिक अनुसंधान केंद्र, सुरक्षा तंत्र, धर्म-अध्यात्म संस्थान और मीडिया की दुनिया में बहुत-सी कमियां-बुराइयां अवश्य हैं लेकिन इसमें कई गुना अधिक गुणवत्ता, अच्छाइयां, ईमानदारी और समर्पण भी है। तभी तो देश-दुनिया चल रही है। दुर्भाग्य यह है कि इन सभी क्षेत्रों में मुंह काला करने वाले लोगों की भीड़ में ईमानदार भी गालियां खाकर अकारण बदनाम हो रहे हैं। सत्ता व्यवस्था में ही देखिए – रक्षा मंत्री ए.के. एंटनी और थल सेनाध्यक्ष जनरल वी.के. सिंह की ईमानदारी पर बड़ा से बड़ा दुश्मन भी उंगली नहीं उठा सकता। उनकी ईमानदारी, कार्यशैली, अतिभावुकता या कुछ हद तक हठधर्मिता को कमजोरी कहा जा सकता है। दुर्भाग्य यह है कि हथियारों के सौदागरों की लॉबी और कुछ राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों ने एंटनी और जनरल सिंह को खलनायक बना दिया। यह चरित्र हनन क्या अपराध नहीं कहा जाना चाहिए? ईमानदारी का ढोल पीटने वाले 'टोपीधारियों' ने चरित्र हनन के दुष्प्रचार के विरुद्ध मोर्चा क्यों नहीं खोला? एंटनी अकेले नहीं हैं। उनकी सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी में कोषाध्यक्ष मोतीलाल वोरा 50 वर्षों से राजनीति में रहकर मुख्यमंत्री-केंद्रीय मंत्री-राज्यपाल तक रह चुके हैं लेकिन उन पर आज तक व्यक्तिगत रूप से बेईमानी और भ्रष्टाचार का एक भी छींटा उनका बड़ा से बड़ा विरोधी नहीं डाल सका। ऐसे नेता सत्तारूढ़ दल की राष्ट्रीय राजनीति में डॉ. राजेंद्र प्रसाद, लालबहादुर शास्त्री, शंकरदयाल शर्मा, प्रकाशचंद्र सेठी की परंपरा निभा रहे हैं। शास्त्रीजी प्रधानमंत्री रहे, शंकरदयाल शर्मा मुख्यमंत्री, केंद्रीय मंत्री, राज्यपाल, उपराष्ट्रपति, राष्ट्रपति तक रहे लेकिन दोनों ने अपने जीवनकाल में अपना एक मकान तक नहीं बनाया। प्रकाशचंद्र सेठी मुख्यमंत्री, गृहमंत्री, पेट्रोलियम मंत्री, पार्टी के कोषाध्यक्ष तक रहे लेकिन बेहद निर्धन अवस्था में अंतिम दिन काटे और निधन के बाद सरकारी फोन के बकाया बिल भरने तक में श्रीमती सेठी को परेशानी हुई।

दुनिया में अच्छाई बुराई के मुकाबले अधिक है लेकिन बेईमानों की भीड़ में ईमानदार अकारण गालियां खा रहे हैं। सवाल यह है कि बेईमानों का बहिष्कार और ईमानदारी को सम्मान क्यों नहीं दिया जा सकता?

इसमें कोई शक नहीं कि पिछले 8 वर्षों के दौरान मनमोहन सिंह मंत्रिमंडल के कई सदस्य भ्रष्ट और बदनाम हुए और जेल तक पहुंचे लेकिन स्वयं मनमोहन सिंह पर निजी लाभ उठाने जैसे भ्रष्टाचार के आरोप सत्ता के दुश्मन बड़े से बड़े 'स्वामी' तक नहीं लगा सके। श्रीमती प्रतिभा पाटिल राष्ट्रपति के रूप में 5 वर्ष पूरे करने जा रही हैं। राजनीतिक विरोधियों ने उनके एक-दो परिजनों पर भले ही कुछ आरोप जड़े लेकिन श्रीमती पाटिल ने राष्ट्रपति पद के ईमानदारी और निष्पक्षता के मानदंडों को हर कदम पर निभाया। कांग्रेस पार्टी ही नहीं, अन्य राजनीतिक दलों में भी ऐसे नेता हैं। भारतीय जनता पार्टी में श्रीमती सुषमा स्वराज 40 वर्षों से सक्रिय रहकर मंत्री, मुख्यमंत्री रहीं लेकिन व्यक्तिगत रूप से भ्रष्ट होने का आरोप उन पर उनका कट्टर विरोधी भी नहीं लगा पाया। इसी तरह नरेंद्र मोदी विरोधियों के साथ पार्टी में भी सर्वाधिक विवादास्पद बने हुए हैं लेकिन लगभग 10 वर्षों में मुख्यमंत्री पद पर रहते हुए व्यक्तिगत भ्रष्टाचार का आरोप उन पर कोई अखबार तक नहीं लगा पाया। प्रतिपक्ष में एनडीए के संयोजक और जनता दल (यू) के अध्यक्ष शरद यादव 40 वर्षों से राजनीति के अखाड़े में हैं और कभी उनके चेले रहे लालू प्रसाद यादव भ्रष्टाचार के आरोपों में जेल तक हो आए लेकिन शरद यादव प्रदेश या केंद्र में मंत्री अथवा पार्टी के वरिष्ठ पदाधिकारी रहने के बावजूद धनलिप्सा में बदनाम नहीं हुए। जैन हवाला कांड में पार्टी के लिए लाख-दो लाख रुपए का चंदा स्वीकारने की बात यदि वह स्वयं सार्वजनिक नहीं करते तो शायद गंदगी का छींटा उन पर भी नहीं पड़ता। पश्चिम बंगाल और केरल में कई कम्युनिस्ट नेता-मंत्री भ्रष्टाचार में लिप्त पाए गए लेकिन सीताराम येचुरी, ए.बी. बर्द्धन जैसे नेताओं को ममता की फौज भी बेईमान और भ्रष्ट नहीं कह सकती। विडंबना यह है कि इन सभी पार्टियों में बेईमानों की भीड़ के कारण ईमानदार गालियां खाकर दुखी हो रहे हैं।

न्याय व्यवस्था में ही देखिए। सुप्रीम कोर्ट के वर्तमान मुख्य न्यायाधीश एस.एच. कपाड़िया ईमानदार परंपरा के आदर्श हैं। सुप्रीम कोर्ट, उच्च न्यायालयों और निचली अदालतों में पिछले 60 वर्षों के दौरान ईमानदार और निष्पक्ष न्यायाधीशों की लंबी सूची गिनाई जा सकती है। लेकिन हाल के वर्षों में बाहरी लोग ही नहीं, सुप्रीम कोर्ट के पीठासीन मुख्य न्यायाधीश तक अदालत परिसरों को भ्रष्टाचार से मुक्त करने की बात सार्वजनिक मंचों पर करते रहे हैं। थल सेना, वायु सेना, नौ सेना में निचले पदों से लेकर सर्वोच्च पदों तक ईमानदार, साहसी और राष्ट्रभक्त लोगों की संख्या सर्वाधिक है। लेकिन हथियारों के सौदागरों, भ्रष्ट नौकरशाहों और लालची तत्वों ने सुरक्षा तंत्र में विभिन्न स्तरों पर कुछ लोगों को भ्रष्ट बनाकर संपूर्ण व्यवस्था को संदेह के घेरे में ला दिया है।

धर्म प्रधान भारत देश में ऋषि-मुनियों, संतों-महात्माओं की लंबी परंपरा रही है। आज भी हिमालय के गंगा-यमुना तटों से कन्याकुमारी तक ऐसे आध्यात्मिक पुरुष मिल सकते हैं, जो अपनी साधना-उपासना के बल पर ज्ञानवान एवं त्यागी हैं। उनकी ईमानदारी और उदारता को कोई चुनौती नहीं दे सकता लेकिन विभिन्न धर्मों, आश्रमों, संस्थानों के नाम पर ऐसे 'ठग' बाबा-महात्मा भी समाज में दिखाई दे रहे हैं, जो भ्रष्ट और अयोग्य हैं। लाखों लोग उनके भ्रमजाल में फंस जाते हैं। देर-सबेर उनके कारनामे सामने आने लगे हैं लेकिन इससे संपूर्ण संत-महात्मा समाज की छवि धूमिल हो रही है। लगभग यही स्थिति मीडिया संस्थानों की है। मीडिया संस्थानों में सक्रिय अधिकांश लोग ईमानदारी और निष्पक्षता से काम करने का प्रयास करते हैं लेकिन कुछ भ्रष्ट संस्थानों और लालची तत्वों के कारण समाज में ऐसा भ्रम पैदा होने लगा है मानों रुपया या शराब दिए बिना कोई समाचार या विचार सामने नहीं आ सकता। यह छवि ईमानदार लोगों के लिए बहुत बड़ा अभिशाप है। मीडिया के तालाब की सड़ी मछलियों के कारण साफ और मीठा पानी भी जहरीला महसूस होने लगा है। सवाल यह है कि गालियों के साथ बेईमानों के बहिष्कार और दंडित करने के साथ ईमानदारी को अधिक महत्व तथा सम्मान क्यों नहीं दिया जा सकता?